अधिगम आकलन मापन एवं मूल्यांकन

Assessment of Learning Measurement and Evaluation

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक
प्रो. रचना वर्मा मोहन

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
4695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
फोन: 2327 0497, 2328 8285
फैक्स : 011-2328 8285
E-mail: kanishka_publishing@yahoo.co.in

अधिगम आकलन
मापन एवं मूल्यांकन
Assessment of Learning: Measurement and Evaluation

प्रथम संस्करण-2019

© लेखकद्वय

ISBN: 978-93-86556-28-8

भारत में मुद्रित

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, 4695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002 से चैतन्य सचदेवा द्वारा प्रकाशित; क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा शब्द-संयोजन तथा नाइस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन v

1. मूल्यांकन की अवधारणा 1

- मूल्यांकन की परिभाषाएँ 2
- मूल्यांकन के उद्देश्य 2
- मूल्यांकन का महत्व एवं उपयोगिता 3
- मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर 4
- शैक्षिक मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान 6
- अच्छे मूल्यांकन कार्यक्रम की विशेषताएँ 7
- मूल्यांकन का प्रयोग 8

2. मूल्यांकन के प्रकार 13

- योगात्मक मूल्यांकन 13
- प्रयोजन पर आधारित मूल्यांकन 15
- अर्थनिर्णय की प्रकृति 31

3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन 41

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य 41
- भावनात्मक अधिगम निर्धारण 41
- वैयक्तिक गुण और शिक्षा 43
- विद्यालय संदर्शन 55

4. निर्धारण के साधन 62

- सामूहिक प्रक्रिया आकलन 74
- स्वाध्याय और अध्यापक निर्धारण 77
- मुक्त प्रश्न (निबन्धात्मक परीक्षा) 87
- सोचना/चिंतन 95

5. निर्धारण पद्धतियाँ 110
- प्रस्तावना 110
- परीक्षा पदों (प्रश्न/आइटम) के निर्माण के लिए मार्गदर्शक निर्देश 117
- अंक प्रदान करने के सूचक 124
- ई–शिक्षा सेवाओं के दृष्टिकोण 132

6. शिक्षा में आकलन 169
- आकलन की अवधारणा 169
- आकलन के मूलभूत तत्व 169
- शैक्षिक आकलन का प्रयोग 170

7. निष्पादन आकलन 179
- निष्पादन आकलन हेतु निर्देशक बिन्दु 180
- निष्पादन आकलन के गुण 182

8. नवाचारी आकलन प्रारूप एवं व्यूह रचनायें 189
- रुब्रिक्स 189
- रुब्रिक्स के प्रकार 189
- प्रभावपूर्ण आकलन के सिद्धान्त 192
- संरचनात्मक आकलन हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु 193
- संरचनात्मक आकलन हेतु प्रयुक्त व्यूह रचनायें 193
- योगात्मक आकलन हेतु प्रयुक्त व्यूह रचनायें 193

9. पोर्टफोलियो आकलन 201
- पोर्टफोलियो का उपयोग 201
- पोर्टफोलियो आकलन हेतु दिशा निर्देश 202
- पोर्टफोलियो आकलन करते समय ध्यान देने योग्य बिन्दु 203
- पोर्टफोलियो के लाभ 204
- पोर्टफोलियो की सीमाएँ 204

संदर्भ ग्रन्थ सूची 207

अध्याय–1

मूल्यांकन की अवधारणा

मापन प्रक्रिया के अन्तर्गत जहाँ किसी वस्तु को आंकिक स्वरुप (Quantitative form) प्रदान किया जाता है वहीं मूल्यांकन में इसके विपरीत उस वस्तु का मूल्य (Value or quality) निर्धारित किया जाता है अर्थात् मूल्यांकन में इस सत्य का निर्माण किया जाता है कि कौन सी चीज अच्छी है और कौन सी चीज बुरी? अतः जब हम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु का उसके गुण–दोषों के सन्दर्भ में अवलोकन करते है तो वहाँ 'मूल्यांकन' निहित होता है।

शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन को एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस तकनीकी प्रक्रिया के अन्तर्गत न केवल छात्रों की विषय विशेष सम्बन्धी योग्यता की ही जानकारी प्राप्त की जाती है, अपितु उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास किस सीमा तक हुआ है, भी ज्ञात होता है।

साथ ही शिक्षण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों आदि की सफलता के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मूल्यांकन प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है, स्पष्ट है कि मूल्यांकन प्रक्रिया एकांगी (One dimensional) न होकर विभिन्न कार्यों की श्रृंखला (Series of activities) है, जिसके अन्तर्गत मात्र केवल एक ही कार्य (Act) निहित नहीं होता, वस्तु अनेक सोपान (Steps) सम्मिलित रहते हैं।

मूल्यांकन एक सामाजिक प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया का प्रयोग हम दैनिक जीवन में निरन्तर करते रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रिया एवं व्यवहार का मूल्यांकन करता है। प्रत्येक व्यक्ति सम्बन्धित व्यक्ति में उत्पन्न हुए व्यावहारिक परिवर्तनों के आधार पर अपने कार्यों का मूल्यांकन करता है।

शिक्षा का उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वांछनीय विकास एवं परिवर्तन लाना है। शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति विद्यार्थी ने किस सीमा तथा स्तर तक की है, विद्यार्थी ने क्या सीखा है या क्या नहीं सीखा है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर मूल्यांकन द्वारा जाना जा सकता है।

ISBN : 978-93-88039-51-2

भारतीय शिक्षाशास्त्री शृंखला–4

महात्मा गांधी

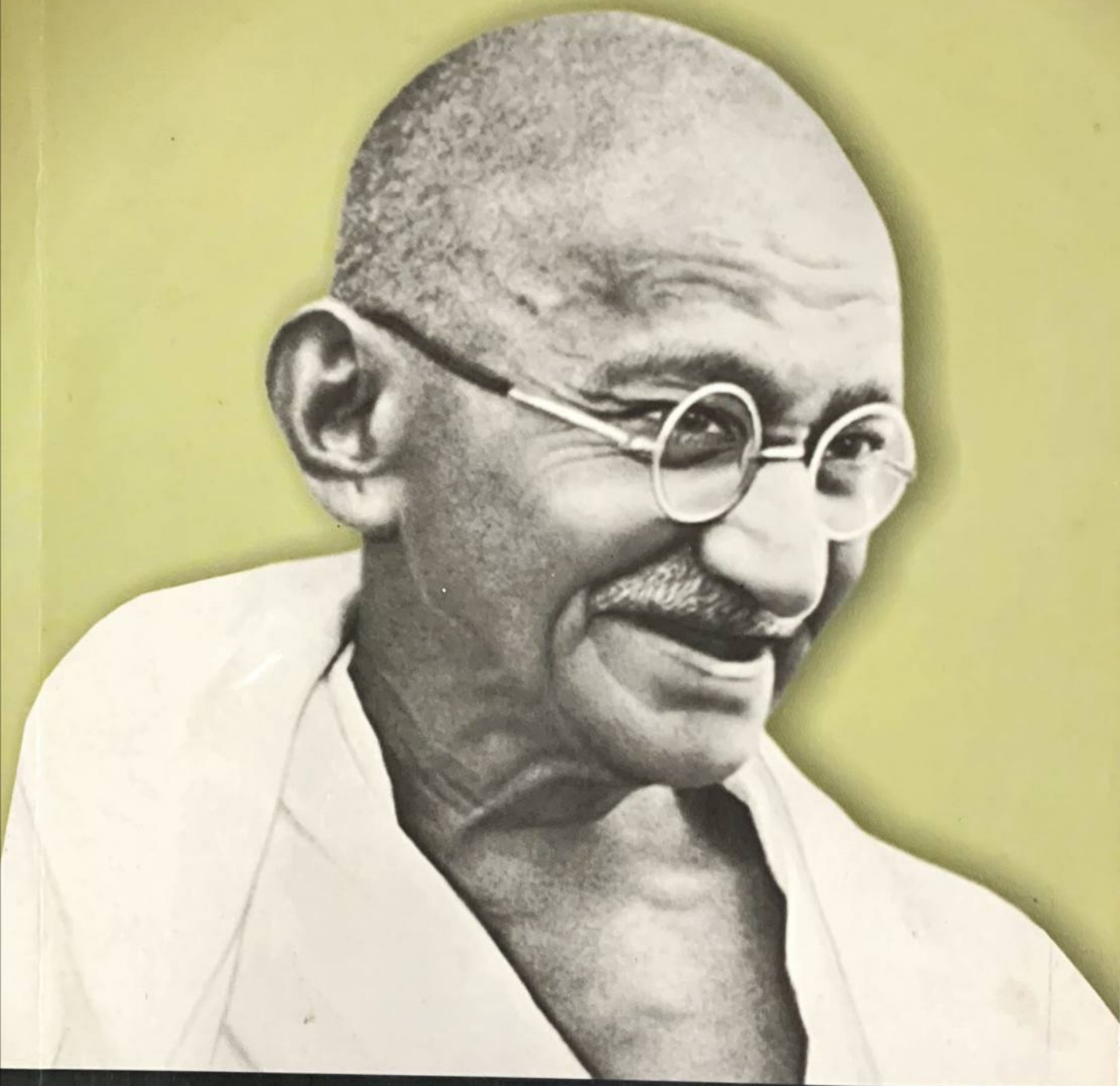

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

● **प्रकाशक एवं कॉपीराइट :**

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN : 978-93-88039-51-2

मूल्य : ₹ 200.00

मुद्रक :

मैमर्स मार्डन ग्रॉफिक्स,

बेलनगंज, आगरा–282004 (उत्तर प्रदेश)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	आलेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. सं.
•	संपादकीय	**प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय**	iii–viii
•	दो शब्द	**प्रो. बीना शर्मा**	ix–x
1.	महात्मा गांधी–रचना संसार	**श्रीमती साधना वैद**	1–24
2.	महात्मा गांधी का जीवन दर्शन	**डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर**	25–43
3.	महात्मा गांधी और बुनियादी शिक्षा	**ऋषभ कुमार मिश्र**	44–55
4.	महात्मा गांधी के शैक्षिक प्रयोग	**प्रो. रचना वर्मा मोहन**	56–66
5.	महात्मा गांधी की शिक्षा का स्वरूप	**डॉ. अनुपम सारस्वत**	67–73
6.	महात्मा गांधी : शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया	**प्रो. बी. एम. दाधीच**	74–84
7.	महात्मा गांधी और अध्यापन विधियाँ	**डॉ. इसपाक अली**	85–105
8.	महात्मा गांधी : कक्षा प्रबंधन	**प्रो. सुनीता मगरे**	106–117
9.	गांधी जी और अनुशासन	**प्रो. कोकिला पारेख**	118–123
10.	महात्मा गांधी और समाज शिक्षा	**डॉ. कुलदीप मिश्रा** **डॉ. सीमा दायमा**	124–136

4

महात्मा गांधी के शैक्षिक प्रयोग

—प्रो. रचना वर्मा मोहन

"मैंने यह सुझाने का साहस किया है कि शिक्षा को हमें स्वावलंबी बना देना चाहिए, फिर भले ही लोग मुझे यह कहें कि मेरे अंदर किसी रचनात्मक कार्य की योग्यता नहीं है। उसके स्वावलंबी होने को ही मैं उसकी सफलता की कसौटी मानूँगा।"

—महात्मा गांधी

शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षित व्यक्ति राष्ट्र व समाज की महत्वपूर्ण धरोहर होते हैं। वे संपूर्ण समाज को उन्नति व प्रगति के पथ पर अग्रसर करते हैं। परन्तु प्रचलित शिक्षा व्यवस्था क्या वास्तव में मानव का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम है? क्या वास्तव में शिक्षा मनुष्य को पशुत्व से मनुष्यत्व तथा मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ले जा रही है। सच्ची शिक्षा क्या है ? क्या अच्छी नौकरी पा लेना ही शिक्षा का ध्येय है? क्या शिक्षा वास्तव में मनुष्य के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को आलोकित कर पा रही है? इन सभी प्रश्नों के संदर्भ में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों तथा शैक्षिक प्रयोगों का अध्ययन करना नितांत आवश्यक है।

इसके पूर्व गांधीजी के जीवन दर्शन को समझना भी आवश्यक है जिसके आधार पर उन्होंने बुनियादी शिक्षा का स्वरूप बताया। 'सत्य के प्रयोग' (आत्मकथा) वास्तव में उनके शिक्षा के प्रयोग ही हैं। अहिंसा एवं सत्य के उपासक गांधीजी ने निरंतर असत्य को सत्य से जीतने के लिए संघर्ष किया। ईश्वर में अटूट विश्वास, सत्य, अहिंसा, निर्भयता, सत्याग्रह, मानव सेवा, आत्म अनुशासन, आत्मशुद्धि एवं शुद्ध जीवन आदि उनके जीवन दर्शन के प्रमुख अंग रहे हैं।

गांधीजी के शिक्षा संबंधित विचार

गांधी जी एक राजनेता के रूप में इतने चर्चित रहे कि शिक्षा में उनके योगदान को विशेष महत्व नहीं दिया गया। शिक्षा के बारे में गांधी जी का मत था, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य, बालक तथा मनुष्य के तन, मन और आत्मा में से सर्वोत्तम को चारों ओर से बाहर

संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 112 वाँ पुष्प

बदलते शैक्षिक परिदृश्य में मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य

प्रधान सम्पादक

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय

(कुलपति)

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. के. भरतभूषण

प्रो. रचना वर्मा मोहन

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली-110016

प्रकाशक
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानि कक्षेत्र
नई दिल्ली-110016

आई.एस.बी.एन : 81-87987-09-8

प्रकाशन वर्ष - 2021

© श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

मूल्यम् : ₹ 500/-

मुद्रक
अमर प्रिंटिंग प्रैस
8/25 विजयनगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8802451208

महत्त्व —आदित्य सेमवाल 427

62. शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में योगासनों की महत्ता —अनुप कुमार 433

63. सुस्थित जीवन शैली मुद्दे एवं चुनौतियाँ —सरिता 443

English

64. Mental Health in Sociological and Psychological Perspective : A Critical Analysis —**Prof. Rachna Verma Mohan** 451

65. 'Role of Teacher In Promoting Mental Health' —**Dr. Rajani Joshi Chaudhary** 462

66. Health Education Programme in Schools —**Dr. Manoj Kumar Meena** 470

67. Yoga is Precise Style to Expansion of Mental and Physical Health —**Dr. Rakesh Rai & Anita Rai** 476

68. Therapeutic Impact of Reading Literature In Relation to Mental well Being —**Dr. Minu Kashyap** 486

69. Physical Education as a Tool for Addressing Issues and Challenges related to Lifestyle Disorder in India —**Bhavana Bapat** 492

Mental Health in Sociological and Psychological Perspective : A Critical Analysis

—Prof. Rachna Verma Mohan
Department of Education

The man of today is becoming materialistic day by day. His environment has also become materialistic from non materialistic which has given rise to various problems. With tremendous scientific and technological advancement, everyone is busy in achieving material goals which has resulted in loss of peace of mind. Human, moral, spiritual and ethical values are declining. Materialistic outlook along with competition symbolizes modernization during the present century. These problems are taking the man from simplicity of behavior to complexity of behavior. Competition has made life more complex. Stress, anxiety, conflicts and frustration have become common features of every person's life. This is the reason why the man is suffering from high blood pressure, obesity, various types of pains in the body as well as mental diseases.

Sociological Perspective

Education today is mostly concerned with acquisition of knowledge and passing of examination in order to achieve

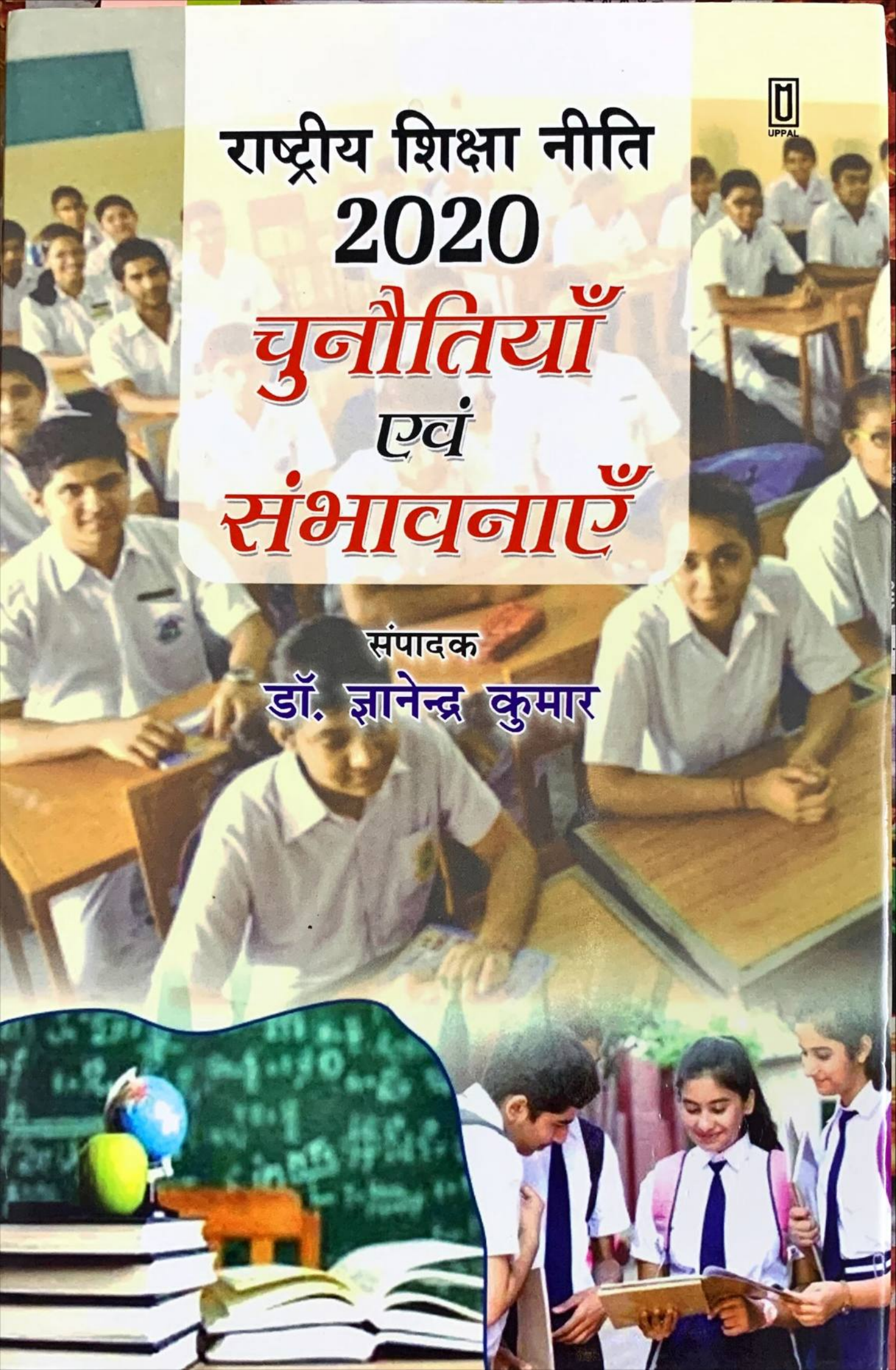

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

संपादक
डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार

UPPAL

उप्पल पब्लिशिंग हाउस

23 अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली–110002

फोन 23273756, 23286571, 43580500

फैक्स: 91-011-23286571

ईमेल: uppalbooks@gmail.com

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण 2022

आई.एस.बी.एन.: 978-81-954083-1-3

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिक तौर पर या पुस्तक के किसी भी अंश को फोटोकापी से रिकार्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुनर्प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित ना किया जाए।

भारत में प्रकाशित

प्रकाशकः उप्पल पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित, **शब्द सज्जाः** सत्यासाई ग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा एवं आवरण मीडिया ग्राफिक्स, दिल्ली द्वारा तथा **मुद्रकः** बालाजी आफसैट, दिल्ली

अनुक्रमणिका

	संपादक की लेखनी	v
	प्रयुक्त संकेताक्षरों की सूची	xi
1.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : विजन एवं मिशन** श्री विवेक माधव	1
2.	**पाठ्यचर्या का नवीन अभिकल्पन** प्रो. रचना वर्मा मोहन	7
3	**पाठ्यपुस्तक निर्माण के विविध आयाम** डॉ. जितेन्द्र कुमार पाटीदार	27
4.	**अध्यापक शिक्षा : दशा और दिशा** डॉ. मोनिका पारीक एवं डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार	43
5.	**विद्यालयीय शिक्षा** डॉ. संदीप कुमार	57
6.	**ऑनलाइन व डिजिटल शिक्षा** डॉ. मनीषा तनेजा	75
7.	**पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा का स्थान : तब और अब** डॉ. सुमन प्रसाद भट्ट	95
8.	**शिक्षा की माध्यम भाषा** डॉ. राजेश प्रसाद सिंह	125
9.	**उच्च शिक्षा** डॉ. रजनी कोटनाला	139
10.	**परीक्षा एवं मूल्यांकन में सुधार की संकल्पना** डॉ. अलका भटनागर	159

Page 7—25

2

पाठ्यचर्या का नवीन अभिकल्पन

प्रो. रचना वर्मा मोहन

किसी भी देश की प्रगति में उसकी शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा का कार्य एक न्यायपूर्ण व सुसंगत तरीके से समाज की स्थापना करना है, जिसमें सभी नागरिकों को शिक्षा का अधिकार समान रूप से प्राप्त हो। न्यायसंगत समाज के निर्माण हेतु शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर सुव्यवस्थित गुणवत्तापूर्ण पाठ्यक्रम का होना नितान्त आवश्यक है। ज्ञान के बदलते परिदृश्य में प्रौद्योगिकी के तीव्रतम विकास को देखते हुए, पाठ्यक्रम में बदलाव लाना आज की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नीति निर्माताओं ने विस्तृत शिक्षा नीति देश को दी है। इसके अन्तर्गत 2030 तक सकल नामांकन अनुपात (G.E.R.) को 100% लाने का लक्ष्य रखा गया है तथा शिक्षा के क्षेत्र पर जी.डी.पी. के 6% हिस्से के व्यय का लक्ष्य रखा गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों में बुनियादी क्षमताओं के साथ-साथ उच्चतर स्तर की तार्किक एवं समस्या समाधान सम्बन्धी संज्ञानात्मक योग्यताओं के विकास पर बल देती है। साथ-साथ नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर व्यक्ति के विकास में सुदृढ़ता हो, इसके लिए यह नीति भारत की परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को आधार मानकर पाठ्यक्रम निर्माण को महत्व देती है। इस नीति के उचित एवं प्रभावी क्रियान्वयन से शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ेगी तथा "आत्मनिर्भर भारत" का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा। वास्तविक धरातल पर इसके प्रभावी क्रियान्वयन से पूर्व क्या-क्या चुनौतियाँ आयेंगी तथा क्या-क्या सावधानियाँ अपेक्षित होंगी इन पक्षों पर भी

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 116 पुष्पम्

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समीक्षात्मक विश्लेषण

(शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी)

(Seminar Proceeding)

8-9 मार्च, 2018

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

डॉ. विचारी लाल मीणा

डॉ. पिंकी मलिक

डॉ. परमेश कुमार शर्मा

डॉ. आरती शर्मा

शोध-प्रकाशनविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

नवदेहली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-93-6

मूल्यम् : ₹ 300.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

7. विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम में गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दे एवं चुनौतियाँ 52
—डॉ. शिवदत्त आर्य

8. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा छात्राध्यापकों की दक्षताओं का ह्रास या विकास 57
—डॉ. आरती शर्मा

9. अध्यापक शिक्षा एवं विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम 69
—डॉ. प्रदीप कुमार झा

10. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समस्याएँ एवं उनके समाधान 75
—डॉ. भारती कौशल

11. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के मुख्य घटकों का विश्लेषण 84
—डॉ. रतनसिंह

12. अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में नवाचारी अभ्यास 92
—सनत कुमार झा

13. अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में विद्यालय प्रशिक्षुता कार्यक्रम की गुणवत्ता विकास हेतु उपाय 97
—यासमीन अशरफ

14. द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में योगशिक्षा की आवश्यकता 110
—नवीन आर्य

English

15. Two Years Teacher Education Curriculum and Strategies for Effective Implementation - A Critical Analysis 121
—Prof. Rachna Verma Mohan

Two Years Teacher Education Curriculum and Strategies for Effective Implementaion-A Critical Analysis

-Prof. Rachna Verma Mohan
Dept. of Education
Shri Lal Bahadur Shastri Rastriya
Sanskrit Vidyapeetha, New Delhi.

Teacher is the top most academic and professional person in the educational pyramid. He is the pivot around which all the educational programme rotate in so far as their implementation is concerned. The success of any educational programme depends on the quality of teachers and quality of teachers, in turn depends to a large extent upon the quality of teacher education. The main focus of the entire process of teacher education lies in its curriculum, design, structure, organization and transaction modes, as well the extent of its appropriateness. Teacher education programme should be sensitive enough towards changing needs of the society and field conditions. It should also be flexible to accommodate, absorb, delete in relation th changing field needs. Obviously, this requires continuous effort in all aspects of curriculum. Such efforts comprises continuous appraisal of curriculum components, arriving at a plausible and relevant framework as a model for different forms of teacher education, generating and testing newer pactices and components, trying out innovative ideas and schemes, and generating a knowledge base through systematic conceptualization.

Effort in these directions has received greater emphasis since Independence. After the establishment of the NCTE as a statutory

संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 114 पुष्प

अध्यापक शिक्षा के संवर्धन में कौशल विकास : प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ

शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित संगोष्ठी-कार्यवृत्त

(Seminar Proceeding)

28-29 मार्च, 2017

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरली मनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुरेन्द्र महतो
2. डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार
3. डॉ. शिवदत्त आर्य
4. डॉ. जितेन्द्र कुमार

शोध-प्रकाशन-विभाग:

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

नवदेहली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-91-X

मूल्यम् : ₹ 325.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

19. योग शिक्षा पाठ्यक्रम में कौशल विकास की सम्भावनाएँ 146
–मुकेश कुमार मिश्र

English

20. Leadership Skill Development : Challenges and Strategies 151
–Prof. Rachna Verma Mohan

21. Developing Professional Skills Among Teachers Through Positive Attitude 160
–Dr. Minakshi Mishra

22. Promoting Health and Hygiene as a Crucial Life Skill in Teacher Education 172
–Dr. Manoj Meena

23. 21st Century Competencies and Skills for Prospective Teachers 177
–Dr. Tamanna Kaushal

24. Communication Skill Development : Methods and Strategies 185
–Dr. Pinki Malik

25. Need of Life Skill Development as an Essential Tool for Education in Global Perspective 195
–Shri Ajay Kumar

26. Communication Skill Development-Enhancing Communication Skills to Enhance Teaching Effectiveness 205
–Smt. Pooja Singhal

27. Curriculum Planning : Skill Development 221
–Arunima

Leadership Skill Development : Challenges and Strategies

Prof. Rachna Verma Mohan

Dept. of Education

S.L.B.S.R.S. Vidyapeeth, New Delhi.

Leadership is the ability to inspire or influence others towards the goals. Leadership involves establishing clear vision, sharing that vision with others, providing information, knowledge and methods to realize that vision. It is also about coordinating and balancing the conflicting interests of all members. A leader steps up in the time of crisis, and is able to think and act creatively in difficult situations.

Leadership is a process by which a person/leader can direct, guide and influence the behaviour and work of others towards accomplishments of specific goals in a given situation. It is the ability of a leader to induce the subordinates to work with confidence and zeal. Leaders are required to develop future visions and to motivate the organizational members who want to achieve the vision.

According to **Keith Davis,** "Leadership is the ability to persuade others to seek defined objectives enthusiastically. It is the human factor which binds a group together and motivates it towards goals."

Characteristics of Leadership

1. It is a inter-personal process in which a person is into influencing and guiding group members towards attainment of goals.